1:1, 2

परिचय

पौलुस ने तीमुथियुस को इफिसुस में छोड़ा और स्वयं मकिदुनिया चला गया (1 तीमुथियुस 1:3)। हो सकता है कि वह थोड़े समय के लिए इफिसुस के कार्य का निरीक्षण करने वापस आया (1 तीमु. 3:14, 15), या संभव है कि नहीं आया।

कल्पना कीजिए कि आप तीमुथियुस के स्थान पर हैं, जो अपने मित्र और परामर्शदाता से समाचार की प्रतीक्षा कर रहा है। ऐसी अफवाहें फैल रही हैं कि उसे बंदी बना कर रोम ले जाया गया है। फिर एक दिन एक सहकर्मी पौलुस के पत्र को लिए हुए आता है। कंपकंपाती उंगलियों से आप, उस चम्र-पत्र को खोलकर पढ़ना आरम्भ करते हैं। आपकी सबसे बुरी आशंकाएं सच्च निकलती है। पौलुस का पत्र उसके बंदी बनाए जाने और कष्टों के बारे में बताता है (2 तीमु. 1:8, 12, 16; 2:3)। उसने सबके द्वारा छोड़ दिए जाने और एकाकी होने के बारे में लिखा है (1:15; 4:10, 11, 16)। यह स्पष्ट है कि उसे मृत्यु दंड मिलने का अंदेशा है (4:6)। लेकिन सबसे हृदय विदारक है उसकी अत्यावश्यक याचना: मेरे पास शीघ्र आने का प्रयत्न कर (4:9)।.

हम 2 तीमुथियुस को आंसुओं से भीगा हुआ पत्र कह सकते हैं। जहां मैं बड़ा हुआ, वहां अधिकांश लोग मान्यता रखते हैं "वास्तविक पुरुष रोते नहीं हैं" परंतु बाइबल में वास्तविक पुरुष रोए। दाऊद रोया (भजन 69:3); यिर्मयाह रोया (यिर्म. 9:1); यीशु रोया (लूका 19:41; यूहन्ना 11:35; इब्रा. 5:7)। कुछ अवसरों पर पौलुस भी रोया। उसने प्रभु की सेवा आँसू बहा-बहाकर की (प्रेरितों 20:19), उसने इफिसुस की मंडली को आंसुओं के साथ चिताया (प्रेरितों 20:31), और उसने कुरिन्थियों से कहा, "मैं ने बहुत से आंसू बहा बहाकर तुम्हें लिखा" (2 कुरि. 2:4)। मैं कल्पना नहीं कर सकता हूँ कि उसने 2 तीमुथियुस अपने चेहरे पर बिना कुछ आँसू बहाए लिखा होगा।[1] यह पौलुस द्वारा लिखे गए पत्रों में से सबसे अधिक व्यक्तिगत तथा भावुकतापूर्ण है। इसके अतिरिक्त, मैं यह कल्पना भी नहीं कर सकता हूँ कि तीमुथियुस ने बिना इस पर कुछ आँसू गिराए इस पत्र को पढ़ा होगा।

लेखक: "पौलुस, जो एक प्रेरित है" (1:1)

[1]पौलुस की ओर से जो, उस जीवन की प्रतिज्ञा के अनुसार जो मसीह यीशु में

है, परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित है।

आयत 1. प्राचीन पत्र लेखक के नाम के साथ आरंभ होते थे। इसीलिए, 2 तीमुथियुस की पहली आयत में लिखा है, **पौलुस की ओर से जो, उस जीवन की प्रतिज्ञा के अनुसार जो मसीह यीशु में है, परमेश्वर की इच्छा से मसीह यीशु का प्रेरित है।** बाहरी और भीतरी, दोनों ही प्रमाण यह संकेत करते हैं कि लेखक पौलुस प्रेरित, जिससे हम परिचित हैं, ही था

पत्र में, पौलुस ने अपनी पहचान एक ऐसे "कैदी" (1:8) के रूप में दी है जो "कुकर्मी के समान" (2:9) दुःख उठा रहा है। उसे रोम में कैद किया गया था, परन्तु अब परिस्थिति उस शहर में हुई उसकी पूर्व की कैद से बहुत भिन्न थी (प्रेरितों 28:16-31 में उसका घर में कैदी होना)। रोम में उसकी पहली कैद के समय उसके द्वारा लिखे गए पत्रों (इफिसियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों, फिलेमोन) का भाव मुख्यतः प्रसन्नता का है, परन्तु 2 तीमुथियुस का भाव उदासीन है। पौलुस ने जब बंदीगृह से पत्रियां लिखीं, तब वह मित्रों से घिरा हुआ था; परन्तु जब उसने 2 तीमुथियुस लिखी तब, लूका के अतिरिक्त, सबने उसे छोड़ दिया था (2 तीमुथियुस 4:11)। जब उसने पहली पत्रियां लिखीं थीं, उसे रिहा हो जाने की आशा थी (फिलिप्पियों 1:25, 26; 2:24; फिलेमोन 22); परन्तु जब उसने 2 तीमुथियुस लिखी, तो उसे अपने मारे जाने की संभावना थी (2 तीमु. 4:6, 7)।

प्राचीन परम्पराएं दावा करती हैं कि, रोम में उसे दूसरी बार कैद किए जाने के समय, पौलुस को मामेरटाईन बन्दीगृह में डाला गया था, जो पत्थर का मलिन गड्ढा था, जिसकी पत्थर की ऊँची छत में प्रकाश और वायु के प्रवाह के लिए एक छोटा छेद काटा गया था। यह रोम के मध्य में रोमी हाट के निकट स्थित था।

पौलुस वहाँ कैसे पहुँचा इस विषय पर कुछ शब्द कहना आवश्यक है। रोम से अपनी पहली कैद से छूटने के पश्चात, उसने बहुत दूर-दूर तक यात्राएं कीं। जिन स्थानों पर वह गया उनमें से कुछ का उल्लेख तीमुथियुस और तीतुस को लिखी उसकी पत्रियों में मिलता है: इफिसुस और मकिदुनिया, क्रेते का द्वीप, त्रोआस, कुरिन्थ, मिलेतुस, और संभवतः निकोपोलिस (1 तीमु. 1:3; 2 तीमु. 4:13, 20; तीतुस 1:5; 3:12)।

जिस समय पौलुस यात्रा कर रहा था, प्रचार और उपदेश में व्यस्त था, एक बड़ी आग रोम के सर्कस मैक्सिमस स्थान से जुलाई 18, 64 ई. को आरंभ हुई। तेज हवाओं द्वारा फैलने के द्वारा इस आग की चपेट में एक के बाद एक हलके-फुल्के बने हुए घरों की गलियाँ आती चली गईं। "शहर के चौदह क्षेत्रों में से, प्रत्यक्षतः सात तो पूर्णतः और चार कुछ सीमा तक नाश हो गए।"[2] रोम के क्रुद्ध नागरिकों ने, नीरो के रोम के पुनः निर्माण की महत्वाकांक्षी योजनाओं को जानते हुए और उसके द्वारा हाल ही में किए गए बुद्धिहीन कार्यों के कारण, आग का दोष नीरो पर डाला। अपने पर से ध्यान हटाने के लिए नीरो ने मसीहियों को अपना बलि का बकरा बना दिया।

पहले ही मसीहियों को गलत समझा जाता था और "हर जगह इस मत के विरोध में लोग बातें करते हैं" (प्रेरितों 28:22)। जब वे प्रभु भोज में सम्मिलित होते थे, तब वे प्रभु के शरीर और लहू का उल्लेख करते थे इसलिए उन पर नरभक्षी होने का आरोप था। वे "प्रेम" की बात करते थे और एक दूसरे को "भाई" और "बहन" कहते थे, इसलिए लोग उनमें "कौटुम्बिक व्यभिचार" की बात फुसफुसाते थे! मसीही अन्यजाति मूर्तिपूजक धर्मों के प्रति असहिष्णु थे, इसलिए उन्हें "नास्तिक" कहा जाता था।[3] क्योंकि उनमें से अधिकांश ऐसे व्यक्ति थे जिनका समाज में कोई स्थान नहीं था (1 कुरिन्थियों 1:26), इसलिए वे नीरो के लिए सरल निशाना थे। एक रोमी इतिहासकार, टैसीटस (55-120 ई.), ने सम्राट के कार्यों के विषय में लिखा:

> इस दोषारोपण से मुक्त होने के लिए, नीरो ने यह दोष एक ऐसे समूह पर, जिन्हें लोग मसीही कहते थे, और जो लोगों की बुराइयों तथा घृणा के पात्र थे, मढ़ दिया, और उनपर घोर अत्याचार किए . . . । उनकी मृत्यु में हर संभव निन्दा जोड़ दी गई। जानवरों की खाल से ढाँप कर उन्हें कुत्तों द्वारा फाड़ डालने और मारे जाने के लिए दे दिया गया, या उन्हें क्रूसों पर ठोक दिया गया, या आग में जलाए जाने के लिए सौंप कर फूँक दिया गया, जिससे कि, जब दिन का उजियाला समाप्त हो जाए, तब रात में उजियाला हो।
>
> नीरो ने अपने बागीचों को इस प्रदर्शन के लिए दे दिया, और मानो सर्कस में प्रदर्शनी लगाई।[4]

इस वीभत्स और बुद्धिहीन प्रताड़ना के समय में, एक जाना-माना मसीही अगुवा होने के कारण, पौलुस को भी रोमी अधिकारियों ने कैदी बना लिया। हम इस बात के विषय निश्चित नहीं है कि उसे कैदी कहाँ पर बनाया गया। कुछ का विचार है कि उसने, अपनी योजना के अनुसार निकोपोलिस की यात्रा की (तीतुस 3:12), और वहाँ कैदी बनाया गया। अन्य सुझाव देते हैं कि वह त्रोआस में पकड़ा गया, जो इस बात का स्पष्टीकरण हो सकता है कि उसने अपना बागा वहाँ क्यों छोड़ा (2 तीमु. 4:13)। एक अन्य संभावना है कि, जब पौलुस ने सुना कि मसीहियों को रोम में सताया जा रहा है, तो भाइयों को प्रोत्साहित और दृढ़ करने के लिए वह शीघ्रता से वहाँ गया, परन्तु वहाँ पहुँचने पर स्वयं कैदी बना लिया गया।

यह जैसे भी हुआ हो, अब "बूढ़ा पौलुस" (फिलेमोन 9) रोमी कैद में था। वहाँ, अपनी कैद-कोठरी के मध्यम से उजियाले में उसने अपने प्रिय तीमुथियुस को अपने अंतिम शब्द लिखे।[5] उसके मारे जाने से पूर्व का यह समय 67 ई. में या तो बसंत ऋतु के अन्त, या ग्रीष्म ऋतु के आरंभ का समय था।[6]

पौलुस ने, जैसा वह सामान्यतः करता था, पत्र का आरंभ, अपने परिचय: "पौलुस, यीशु मसीह का एक प्रेरित" के साथ किया। वह एक बूढ़ा व्यक्ति था, जो अंधियारे और सीलन भरे गड्ढे में ठिठुर रहा था, परन्तु वह अभी भी एक प्रेरित था, प्रभु के द्वारा भेजा गया एक सन्देश-वाहक, "जंजीर से जकड़ा हुआ राजदूत"

(इफि. 6:20)। यह पुष्टीकरण उतना तीमुथियुस के लिए नहीं था, जितना उन औरों के लिए था जिनके साथ यह पत्र बाँटा जाएगा।[7]

वह "परमेश्वर की इच्छा से" प्रेरित था। इस वाक्याँश का प्रत्यक्ष महत्व यह है कि उसने स्वयं अपने आप को स्थापित नहीं किया था, परन्तु परमेश्वर ने ही उसे नियुक्त किया था। दमिश्क के मार्ग पर न केवल पौलुस का परिवर्तन हुआ था; उसकी नियुक्ति भी हुई थी। यीशु ने उस अवसर पर उससे कहा था, "मैं तुझे [अन्यजातियों] के पास भेजता हूँ" (प्रेरितों 26:17)। "भेजता" के लिए यूनानी शब्द (ἀποστέλλω, *अपौस्टेलो)* "प्रेरित" के शब्द (ἀπόστολος, *अपौस्टोलोस)* से संबंधित है।

पौलुस के शब्दों का एक अन्य संभव निहितार्थ उसके "परमेश्वर की इच्छा" में बने रहने से संबंधित हो सकता है। एक टेलीविज़न विज्ञापन में सफलता की यह परिभाषा बताई गई थी: "सफलता अपना जीवन अपनी इच्छा के अनुसार जीने की स्वतंत्रता है।" पौलुस की सफलता की परिभाषा होती "सफलता अपना जीवन वैसे जीने की स्वतंत्रता है जैसा परमेश्वर चाहता है कि आप जीएं।"[8] परमेश्वर की इच्छा को करने में कई बार सताव सहना पड़ता है (देखें प्रेरितों 9:16)। बंदीगृह में भी, पौलुस परमेश्वर की इच्छा के मध्य में था। वह वहाँ था जहाँ परमेश्वर चाहता था कि वह हो।

आयत 1 का अन्त इन शब्दों के साथ होता है: "उस जीवन की प्रतिज्ञा के अनुसार जो मसीह यीशु में है।" यद्यपि पौलुस मृत्यु का सामना कर रहा था, वह जीवन: "मसीह यीशु में जीवन" के बारे में बात कर सकता था। डॉन डिवेल्ट ने लिखा, "मसीह के बिना हमारा अस्तित्व तो है परन्तु जीवन नहीं है।"[9] "जीवन की प्रतिज्ञा" में अभी वास्तविक जीवन और बाद में प्रभु के साथ अनन्त जीवन सम्मिलित है (देखें 1:10)। पौलुस एक "मुकुट" (4:8), "*जीवन* का मुकुट" की बाट जोह रहा था (देखें याकूब 1:12; प्रका. 2:10)।

यह बहुतायत का "जीवन" "मसीह यीशु में" है (देखें यूहन्ना 10:10; 1 यूहन्ना 5:12)। पौलुस ने गलतिया के मसीहियों को लिखा: "क्योंकि तुम सब उस विश्वास के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने *मसीह में* बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहन लिया है" (गलातियों 3:26-27; बल दिया गया है)। पौलुस का जीवन और उसका प्रचार, दोनों ही "मसीह में जीवन की प्रतिज्ञा" "के अनुसार" (κατά, *काटा)*, या उसके "सामंजस्य में" थीं।[10]

प्राप्तकर्ता: "तीमुथियुस, मेरा प्रिय पुत्र" (1:2)

[2]प्रिय पुत्र तीमुथियुस के नाम।

आयत 2. पौलुस ने इस पत्र के प्राप्तकर्ता को संबोधित किया: **प्रिय पुत्र तीमुथियुस के नाम**। अपनी अपने पहले पत्र में, पौलुस का तीमुथियुस को

संबोधित करना उसके अधिकार को स्थापित करने के उद्देश्य से था: "विश्वास में मेरा सच्चा [वास्तविक/असली] पुत्र" (1 तीमु. 1:2)। यहाँ शब्दावली अधिक व्यक्तिगत, अधिक अंतरंग है: "मेरा प्रिय पुत्र।"[11] "प्रिय" (ἀγαπητός, *अगापेटॉस)* "प्रेम" के लिए विशिष्ट शब्द (ἀγάπη, *अगापे)* का विशेषण रूप है। यह उसका वर्णन करता है "जो अति प्रिय, प्रिय, अत्यधिक प्रिय, बहुमूल्य, मूल्यवान"[12] है और इसका मत्ती 3:17 में प्रयोग हुआ है, जहाँ परमेश्वर ने कहा, "यह मेरा प्रिय पुत्र है।"

2 तीमुथियुस के लिखे जाने के समय, पौलुस का "प्रिय पुत्र" बहुत संभव है इफिसुस में था। लेख में कई संकेत इस निष्कर्ष की ओर संकेत करते हैं: पहला, तीमुथियुस इस तथ्य से अवगत थी "कि आसियावाले सब मुझ[पौलुस] से फिर गए हैं" (1:15)। यदि तीमुथियुस इफिसुस में था (जो आसिया का रोमी प्रदेश था), तो वह निश्चय ही इससे अवगत रहा होगा। दूसरा, उनेसिफुरुस, जिसने पौलुस की रोम में सहायता की थी, संभवतः इफिसुस से था (1:16-18)। पौलुस ने तीमुथियुस से कहा कि वह उसके नमस्कार को उनेसिफुरुस के घराने को पहुँचा दे (4:19), जो करना सहज होता यदि तीमुथियुस इफिसुस में था।

फिर, तीमुथियुस को "हुमिनयुस" जैसे व्यक्तियों की "अशुद्ध बकवाद से बचा रहना" था (2:16, 17)। तीमुथियुस के नाम पौलुस की पहली पत्री संकेत करती है कि हुमिनयुस इफिसुस में रहता था (1 तीमु. 1:19, 20)। चौथे, जब तीमुथियुस रोम आए, तो उसे त्रोआस में रुक कर पौलुस के बागे को ले आना था (2 तीमु. 4:13)। त्रोआस और इफिसुस दोनों ही आसिया के प्रदेश में थे, और त्रोआस इफिसुस से रोम के एक अधिक प्रचलित मार्ग पर स्थित था। पाँचवाँ, प्रिस्का और अक्विला वहीं थे जहाँ तीमुथियुस भी था (4:19)। इस दंपति ने किसी समय में इफिसुस को अपना घर बना लिया था (प्रेरितों 18:18, 19, 24-26; देखें 1 कुरि. 16:19)।

छठे, पौलुस ने तुखिकुस को इफिसुस भेजा (2 तीमु. 4:12)। इससे पूर्व, पौलुस ने इफिसुस को लिखे अपने पत्र के लिए उसपर भरोसा रखा था (इफि. 6:21)। इसकी प्रबल संभावना है कि, इफिसुस की यात्रा के समय, वह तीमुथियुस को लिखे पत्र को भी लेकर गया होगा। यह भी संभव है कि पौलुस चाहता हो कि वह तीमुथियुस का स्थान ले जिससे तीमुथियुस रोम की यात्रा कर सके (2 तीमु. 4:9, 21)। सातवें, 1 तीमुथियुस में जिन त्रुटियों और बुराइयों का इफिसुस के संदर्भ में उल्लेख किया गया है, वे वही हैं जिनका उल्लेख 2 तीमुथियुस में हुआ है (2:16-18, 23; 3:5-7; 4:3, 4)।

संचय हुए प्रमाण हमें इस निष्कर्ष पर ले जाते हैं कि तीमुथियुस संभवतः इफिसुस में ही था जब पौलुस ने अपना दूसरा पत्र उसे लिखा। हम नहीं जानते हैं कि पौलुस द्वारा उसे सौंपे गए कार्यों में से तीमुथियुस ने कितने पूरे कर लिए थे, परन्तु अब प्रेरित चाहता था कि वह रोम आ जाए।

सामग्री

पौलुस का 2 तीमुथियुस को लिखने का उद्देश्य क्या था? हम यह उत्तर दे सकते हैं कि वह तीमुथियुस को अपनी परिस्थिति के बारे में नवीनतम जानकारी देना चाहता था, उस जवान प्रचारक को प्रोत्साहित करना चाहता था, और उससे कई निवेदन करना चाहता था। जब हम पौलुस की तीमुथियुस से शरद ऋतु से पहले आने की और उसका बागा, और चर्म-पत्रों को लाने की अविलम्ब याचना को पढ़ते हैं, तो हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि उसका प्राथमिक उद्देश्य था तीमुथियुस उसके पास आए।

पौलुस के लिखने के कारणों में संभवतः उपरोक्त सभी सम्मिलित थे; परन्तु जब विद्यमान परिस्थितियों के दृष्टिकोण से जब हम पत्री को उसकी सम्पूर्णता में देखते हैं, तो एक और भी प्रबल उद्देश्य दिखाई देता है। पौलुस वृद्ध था और मृत्यु का सामना कर रहा था। अनेकों जन हवा में उड़ रहे पत्तों के समान बिखरते जा रहे थे। उनकी तुलना में झूठे उपदेशक उन्नति करते हुए प्रतीत हो रहे थे। समय बुरा था तथा और अधिक बुरा होने जा रहा था (3:1-5; 4:3, 4)। पौलुस के मन में प्रत्यक्ष रूप से ये प्रश्न थे: "क्या कलीसिया बचने पाएगी?" और "क्या सुसमाचार प्रचार होना जारी रहने पाएगा?"

यह सुनिश्चित करने के लिए कि ऐसा होगा, तीमुथियुस को अगुवे की भूमिका स्वीकार करने के लिए तैयार होना आवश्यक था। यद्यपि तीमुथियुस के साहस के विषय वास्तविकता से बढ़कर कहा जाता है, संभवतः उसमें वह निर्भीकता नहीं थी जो पौलुस में थी। वह और पौलुस मिलकर एक अच्छी टोली बनाते थे क्योंकि पौलुस निर्भीक था, और साहसी भी, जबकि हो सकता है कि तीमुथियुस अधिक सावधान और संवेदनशील था। परन्तु जब पौलुस चला जाएगा, तब तीमुथियुस को आगे ही बढ़ते जाना था चाहे समय अच्छा हो या बुरा - तब जब लोग सुनने को तैयार हों, और तब जब वे सुनना न चाहें। चाहे जो भी आए, उसकी चिंता किए बिना उसे तैयार रहना था उलाहना देने, डाँटने और समझाने के लिए (4:2-4)। इन कारणों से पौलुस ने लिखा, "क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ्य और प्रेम और संयम की आत्मा दी है" (1:7); "इसलिए, हे मेरे पुत्र, बलवंत हो जा . . ." (2:1)।

अभिनंदन (1:2)

[2]परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु मसीह यीशु की ओर से तुझे अनुग्रह और दया और शान्ति मिलती रहे।

आयत 2. उस समय के पत्रों में जैसा पारंपरिक था, इसके बाद एक अभिनंदन आया: **परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु मसीह यीशु की ओर से तुझे अनुग्रह और दया और शान्ति मिलती रहे।** यह अभिनंदन तीमुथियुस को दृढ़

करने के उद्देश्य से था। इसमें दी गई आशीष को इस प्रकार से संक्षिप्त किया जा सकता है: असहायों के लिए अनुग्रह, अभागों के लिए करुणा, और आशाहीनों के लिए शान्ति।

ये अद्भुत आशीषें "परमेश्वर पिता और हमारे प्रभु मसीह यीशु" से हैं। परमेश्वर के विषय अपना स्वर्गीय "पिता" होने का विचार मुख्यतः नए नियम का विचार है। पुराने नियम (बाइबल के तीन चौथाई भाग) में, परमेश्वर को सात आयतों में आठ बार "पिता" कहा गया है[13] और पिता के साथ उसकी तुलना अन्य सात आयतों में की गई है।[14] नए नियम (बाइबल का एक चौथाई भाग) में उसे "पिता" *250* बार कहा गया है। यीशु ने हमें प्रार्थना करना सिखाया, "हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है" (मत्ती 6:9)।

यहाँ का अभिनंदन वही है जो 1 तीमुथियुस 1:2 में है, इस के अतिरिक्त कि वहाँ यीशु को "मसीह यीशु, जो हमारी आशा है" कहा गया है, जबकि यहाँ उसे "हमारे प्रभु मसीह यीशु" कहा गया है। "प्रभु" (Κύριος, *क्युरियोस)* संकेत करता है वह जिसका हमें आज्ञाकारी होना है और वह भी जिसके पास सुरक्षा एवं बल देने की सामर्थ्य है। संभवतः तीमुथियुस को प्रोत्साहित करने के लिए पौलुस ने यीशु का इस प्रकार से वर्णन किया।

कुछ रूपरेखाएँ

सभी व्यक्तिगत पत्रों के समान, 2 तीमुथियुस की रूपरेखा बनाना कठिन है। यहाँ एक से दूसरा विचार प्रवाहित होता रहता है, और खण्ड परस्पर कुछ अंश तक एक दूसरे को ढाँप लेते हैं। विषय छोड़ दिए जाते हैं, बाद में फिर उठा लिए जाते हैं। निम्नलिखित साधारण रूपरेखा 2 तीमुथियुस के मुख्य बिंदुओं को प्रमुख करने का प्रयास है:

नमस्कार (1:1, 2)

I. पौलुस द्वारा तीमुथियुस का प्रोत्साहन (1:3-2:26)
   A. विश्वासयोग्य हो (1:3-18)
   B. दृढ़ हो (2:1-13)
   C. परमेश्वर द्वारा स्वीकृत हो (2:14-26)

II. पौलुस द्वारा तीमुथियुस को सचेत करना (3:1-4:8)
   A. स्वधर्म त्याग से सचेत रह (3:1-9)
   B. विश्वास की रक्षा कर (3:10-17)
   C. वचन का प्रचार कर (4:1-8)

समापन टिप्पणियाँ: अभिनंदन, व्यक्तिगत निवेदन, और एक आशीष वचन (4:9-22).[15]

यह पत्र की एक अन्य रूपरेखा है:

अध्याय 1: सुसमाचार की रक्षा करने का दायित्व (देखें 1:14).
अध्याय 2: सुसमाचार के लिए दुःख उठाने का दायित्व (देखें 2:3, 8, 9).
अध्याय 3: सुसमाचार में बने रहने का दायित्व (देखें 3:13, 14).
अध्याय 4: सुसमाचार का प्रचार करने का दायित्व (देखें 4:1, 2).[16]

विलियम हेन्ड्रिक्सन ने इस पत्र की अपनी रूपरेखा को शीर्षक दिया "सही सिद्धान्त के विषय" और यह विभाजन प्रस्तुत किए:

अध्याय 1: इसे थामे रहो (देखें 1:13).
अध्याय 2: इसे सिखाओ (देखें 2:2).
अध्याय 3: इसमें बने रहो (देखें 3:14).
अध्याय 4: इसका प्रचार करो (देखें 4:2).[17]

हम पत्र में विचारों के प्रवाह को भी देख सकते हैं। उदाहरण के लिए, जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट ने ध्यान किया कि इस छोटे से पत्र में पौलुस ने तीमुथियुस से तीन बार कहा, σὺ δὲ (*सू दे*), जिसका अनुवाद किया जा सकता है "पर तू" (3:10, 14; 4:5)।[18] उस जवान प्रचारक को पौलुस द्वारा उल्लेखित बुरे उदाहरणों से भिन्न होना था।

समाप्ति नोट्स

[1]संभव है कि लिखने के स्थान पर पौलुस ने पत्र को बोलकर लिखवाया हो। [2]एस. एंगस और ए. एम. रेन्विक, "नीरो," *द इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बाइबल एन्साइक्लोपीडिया*, रिवाइज्ड एडिशन, ज्यौफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग को., 1986), 3:522. [3]मिनुसियुस फेलिक्स *ऑक्टेवियस* 8-10. [4]टैसीटस *एनल्स* 15.44. [5]हो सकता है कि उसने लूका को बोलकर पत्र लिखवाया हो। [6]पौलुस ने 4:21 में तीमुथियुस से आग्रह किया कि वह "जाड़े से पहले" आ जाए। कुछ पौलुस के कैद किए जाने और उसके द्वारा 2 तीमुथियुस लिखे जाने की तिथि और बाद की लगाते हैं - रोम की आग के कुछ समय बाद (64 ई.)। [7]4:22 में "तुम" बहुवचन है। तीमुथियुस के अतिरिक्त, पौलुस इफिसुस के तथा अन्य सभी मसीहियों को भी, संबोधित कर रहा था, आज हमें भी। [8]गैरी डब्ल्यू. डेमारेस्ट, *1, 2 थिस्सलोनियंस, 1, 2 टिमोथी, टाईटस*, द कम्यूनिकेटर्स कॉमेन्ट्री, वोल. 9 (वैको, टेक्सस: वर्ड बुक्स, 1984), 235-36. [9]डॉन डिवेल्ट, *पॉल्स लेटर्स टू टिमोथी एण्ड टाईटस* बाइबल स्टडी टेक्सटबुक (जोपलिन, मिसौरी: कॉलेज प्रैस, 1961), 192. [10]विलियम हेन्ड्रिक्सन, *एक्सपोजिशन ऑफ द पास्टोरल एपिसल्स*, न्यू टेस्टामेंट कॉमेन्ट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1965), 223.

[11]"चाइल्ड" 1 तीमुथियुस 1:2 में और "सन" 2 तीमुथियुस 1:2 में दोनों ही "चाइल्ड" (τέκνον, *टेक्नौन*) के लिए यूनानी शब्द का अनुवाद हैं। [12]वॉल्टर बाऊर, *ए ग्रीक-इंगलिश लेक्सिकन ऑफ द न्यू टेस्टामेंट एण्ड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिट्रेचर*, तीसरा संस्करण, रिवाइज्ड एंड

एडिटेड फ्रेड्रिक विलियम डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, 2000), 7. [13]देखें व्यव. 32:6; भजन 89:26; यशा. 9:6; 63:16 (दो बार); 64:8; यिर्म. 3:4, 19. (फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राइवर, एण्ड चार्ल्स ए. ब्रिग्स, *ए हीब्रयू एण्ड इंगलिश लेक्सिकॉन ऑफ द ओल्ड टेस्टामेंट* [ऑक्सफोर्ड: क्लैरेंडौन प्रेस, 1972], 3.) [14]देखें 2 शमूएल 7:14; भजन 68:5; 103:13; नीति. 3:12; यिर्म. 31:9; मलाकी 1:6; 2:10. (डॉन शैक्लफोर्ड, *आइज़ायाह,* ट्रुथ फॉर टुडे कॉमेन्ट्री [सियरसे, अर्केन्सा: रिसोर्स पब्लिकेशन्स, 2005], 134.) [15]डेविड रोपर, *थ्रू द बाइबल* (डिलाइट, अर्केन्सा: गौस्पल लाईट पबलिशिंग को., 1999), 248. [16]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *गार्ड द गौस्पल: द मेसेज ऑफ 2 टिमोथी,* द बाइबल स्पीक्स टुडे (डाउनर्स ग्रोव, इल्लिनोय: इन्टरवर्सिटी प्रैस, 1973), 21. [17]हेन्ड्रिक्सन, 219. [18]स्टॉट, 92, 111.